Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Deptt. of Philosophy
R.N. College, Hajipur

class → T.D.C. Part II

Paper → IV
(History of Western Philosophy)

Topic → Hume – Impression and Ideas

डेविड ह्यूम — संस्कार एवं प्रत्यय
(David Hume — Impressions and Ideas)

सुविख्यात दार्शनिक डेविड ह्यूम अनुभववाद (Empiricism) के समर्थक हैं, जिनके अनुसार ज्ञान का मूल स्रोत अनुभव या प्रत्यक्ष (Perception) है। इसके दो घटक हैं — (i) संस्कार (Impression) तथा (ii) प्रत्यय (Idea)। संस्कार के अन्तर्गत सभी प्रकार की सजीव अनुभूतियाँ आती हैं जो तेजी से मस्तिष्क में प्रवेश करती हैं। इसकी विशेषता है कि ये हमारी चेतना में सर्वप्रथम प्रवेश करते हैं। ह्यूम सभी प्रकार की बाह्य एवं मानसिक अनुभूतियों को संस्कार कहते हैं। इसलिए संस्कार के दो रूप होते हैं — (1) बाह्य संस्कार — पंचज्ञानेन्द्रियों के द्वारा प्राप्त संवेदनाएँ बाह्य संस्कार के रूप हैं। जैसे — देखना, सुनना, सूँघना, स्वाद या स्पर्श की अनुभूति। तथा (2) आन्तरिक संस्कार — हमारे समस्त मनोवेग आन्तरिक संस्कार के सूचक हैं। जैसे — क्रोध करना, ईर्ष्या, घृणा या भय की भावना। इससे स्पष्ट है कि किसी कुर्सी को देखना तथा उससे गिर जाने पर होने वाले चोट का अनुभव — ये दोनों ही संस्कार के अन्तर्गत आते हैं।

ह्यूम के अनुसार प्रत्यय (Idea) संस्कार के ही धुँधले प्रतिरूप होते हैं। जब किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण होता है, तो उसकी एक छाप हमारे मानस पर पड़ती है। इस प्रत्यक्षीकरण के प्रतिरूप को ही प्रत्यय कहते हैं। जैसे — दूध का प्रत्यक्ष होना संस्कार है तथा गर्म दूध पीने से जलने की स्मृति होना प्रत्यय है। प्रत्ययों की रचना संस्कार के बिना नहीं हो सकती। जैसे — जन्मान्ध व्यक्ति रंग की पहचान नहीं कर सकता, बहरे को शब्द का प्रत्यय नहीं होता आदि। ह्यूम का मानना है कि कुछ प्रत्यय संस्कारों के बिना भी कल्पना के आधार पर बन जाते हैं। उदाहरण के लिए, मनुष्य एवं पंक्षी — इन दो संस्कारों को जोड़कर कल्पना के आधार पर पंखयुक्त स्त्री (परी) का प्रत्यय बन जाता है। इसप्रकार ह्यूम दो प्रकार के प्रत्ययों का उल्लेख करते हैं — (1) सरल — ये प्रत्यय मूल संस्कारों के प्रतिरूप होते हैं

तथा (2) मिश्र — इसके लिए संस्कारों का होना आवश्यक नहीं होता। मन स्वतः अनेक प्रत्ययों को जोड़कर इसका निर्माण करता है।

ज्ञान के निर्माण में ह्यूम बुद्धि को निष्क्रिय मानते हैं। अनुभव के द्वारा हमें साक्षात् ज्ञान प्राप्त होता है। बुद्धि का इसमें कोई योगदान नहीं होता। पंचज्ञानेन्द्रियों एवं मन से प्राप्त बाह्य एवं आन्तरिक अनुभव संस्कार हैं तथा उसके प्रतिरूप प्रत्यय कहलाते हैं। ये प्रत्यय असम्बद्ध, अव्यवस्थित या आकस्मिक नहीं होते, बल्कि इनके बीच क्रमबद्धता रहती है। जल की धारा के समान इनका क्रम बना रहता है। प्रत्ययों के इस गुण को ह्यूम मौलिक या स्वाभाविक मानते हैं। इसका कारण पुनरावृत्ति, आदत या रीति-रिवाज है। इसके निर्माण में स्मृति एवं कल्पनाशीलता की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। किन्तु ये अनिवार्य एवं सार्वभौम नहीं होते। प्रत्यय संस्कार की अपेक्षा कम तीव्र एवं कम सजीव होते हैं। किन्तु इसके अपवाद भी हैं। जैसे — आग से जलने पर उसके जो संस्कार होते हैं, उसकी अपेक्षा जलन के रूप में उसकी स्मृति अधिक तीव्र हो सकती है अर्थात् प्रत्यय रूप में अनुभूति अधिक प्रबल हो सकती है। इसीप्रकार मानसिक प्रत्यय भी अधिक तीव्र हो सकता है। क्रोध, ईर्ष्या या प्रेम के रूप में ये प्रत्यय अर्थात् स्मृति अधिक प्रबल एवं सजीव हो सकते हैं। जैसे — अपमानित होने का अनुभव, किसी से मिलने वाला अत्यन्त दुर्लभ सहयोग का अनुभव आदि अधिक प्रबल नहीं भी हो सकता है, किन्तु स्मृति-रूप में ये प्रत्यय अधिक सजीव एवं प्रबल हो सकते हैं। ह्यूम ने प्रत्ययों के साहचर्य के तीन रूप बतलाये हैं। ये साहचर्य सादृश्य, कालगत एवं देशगत तथा कारण-कार्य के आधार पर होते हैं।

अनुभव के इस विस्तृत विवेचन से ह्यूम ने यह निष्कर्ष दिया है कि संस्कार ही हमारे ज्ञान की अन्तिम सीमा है। इससे परे हम नहीं जा सकते। अनुभव के आधार पर हम ईश्वर, आत्मा आदि को नहीं जान सकते। इसप्रकार अनुभव के यथार्थ स्वरूप की विवेचना कर वे एक संगत अनुभववादी हैं।

———— X ———— X ————